शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

35भीष्म साहनी के उपन्यासों में सांस्कृतिक जीवन दर्शन

डॉ.दिलीप कुमार झा
फोर्ट ग्लास्टर विद्यालय
हावड़ा, पश्चिम बंगाल, भारत

शोध संक्षेप

स्वातंत्र्योत्तर काल के हिन्दी कथाकारों में भीष्म साहनी का स्थान अग्रणी है। उनका समस्त लेखन शोषित, पीड़ित मानवता के प्रति समर्पित है। वे हिन्दी साहित्य में सर्वश्रेष्ठ कथाकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। उन्होंने 'झरोखे' (1967), 'कड़ियां' (1970), 'तमस' (1973), 'बसंती' (1980), 'मय्यादास की माढ़ी' (1988), 'कुंतो' (1993) और 'नीलू नीलिमा नीलोफर' (2000) जैसे उपन्यास लिखे हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में भीष्म साहनी के उपन्यासों में अभिव्यक्त सांस्कृतिक जीवन दर्शन पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

संस्कृति और जीवन दशर्न में घनिष्ठ संबंध है। व्यक्ति एवं समाज के निजी एवं सामूहिक जीवन दर्शन के निर्माण में संस्कृति की महत्वपूर्ण भूमिका है। "संस्कृति क्या है ? इसकी अनेक परिभाषाएं मिलती हैं। संसार में जो सर्वोत्तम बातें जानी या कहीं गयी हैं, उनसे अपने आप को परिचित कराना संस्कृति है।'' एक दूसरी परिभाषा में यह कहा गया है कि संस्कृति शारीरिक या मानसिक शक्तियों का प्रशिक्षण, दृढ़ीकरण या विकास अथवा उससे उत्पन्न अवस्था है। संस्कृति के बारे में जवाहरलाल नेहरु का कथन है "यह मन, आचार अथवा रुचियों की परिष्कृति या शुद्धि है। यह सभ्यता का भीतर से प्रकाशित हो उठना है। इस अर्थ में संस्कृति कुछ ऐसी चीज का नाम हो जाता है जो बुनियादी और अंतर्राष्ट्रीय है। फिर संस्कृति के कुछ राष्ट्रीय पहलू भी हैं और इसमें कोई संदेह नहीं कि अनेक राष्ट्रों से अपना कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व तथा अपने भीतर कुछ खास ढंग के मौलिक गुण विकसित कर लिए हैं।"1

"संस्कृति ऐसी चीज है जिसे लक्षणों से तो हम जान सकते हैं, किंतु उसकी परिभाषा नहीं दे सकते। कुछ अंशों में वह सभ्यता से भिन्न गुण है। अंग्रेजी में कहावत है कि सभ्यता वह चीज है जो हमारे पास है, संस्कृति वह गुण है जो हममें व्याप्त है। मोटर, महल, सड़क, पोशाक और अच्छा भोजन ये तथा इनके समान सारी अन्य स्थूल वस्तुएं संस्कृति नहीं, सभ्यता के समान है। मगर पोशाक पहनने और भोजन करने में जो कला है वह संस्कृति की चीज है।"2

हर सुसभ्य आदमी सुसंस्कृत ही होता है, ऐसा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अच्छी पोशाक पहनने वाला आदमी भी तबीयत से नंगा हो सकता है और तबीयत से नंगा होना संस्कृति के खिलाफ बात है।...प्राचीन भारत में ऋषिगण जंगलों में रहते थे। फूस की झोपड़ियों में वास करना, जंगलों में जीवों से दोस्ती और प्यार करना, किसी भी काम को अपने हाथ से करने में हिचकिचाहट नहीं दिखाना, पत्रों में खाना और मिट्टी के बर्तन में रसोई पकाना, यही उनकी जिंदगी थी। और ये लक्षण आज भी यूरोपीय

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

परिभाषा के अनुसार सभ्यता के लक्षण नहीं माने जाते हैं। फिर भी वे ऋषिगण सुसंस्कृत ही नहीं थे बल्कि वे जाति की संस्कृति का निर्माण कर रहे थे।"3 मानवसृजित कृत्रिम जगत् सार्थकता और महत्ता पाता है। दूसरी ओर संस्कृति में विज्ञान और टेक्नालाजी तथा श्रम और उद्यम आदि के संयोग से रचे और ईजाद किए हुए भोजन, वस्त्र, आवास और भौतिक जीवन को सुखकर और सुविधाजनक बनाने वाले वे सभी नाना प्रकार के मूर्त और स्थूल स्वरूप भी शामिल हैं। यदि संस्कृति के रूप में पहचानता है तो उसके मूर्त रूपों को भौतिक संस्कृति की संज्ञा देता है। भौतिक संस्कृति और आध्यात्मिक संस्कृति - दोनों के संयुक्त विकास से ही मानव पशु योनि से ऊपर उठकर वास्तव में 'मानव'; कहलाने का अधिकारी बनता है। संक्षेप में संस्कृति की रचना के मूल में मानव और प्रकृति का गतिशील संबंध है, जिसमें सामंजस्य और द्वंद्व दोनों के तत्व और संभावनाएं विद्यमान हैं।"6 सारांश यह है कि संस्कृति वह है जो मानव को सुसंस्कृत और यशस्वी बनाती है।

जीवन दर्शन क्या है ? जीवन दर्शन साहित्यकार के जीवन की आलोचना है। डॉ.आदर्श सक्सेना के अनुसार, "जीवन दर्शन से अभिप्राय है - जीवन संबंधी दृष्टिकोण।' इस अर्थ में जीवन दर्शन या कलाकार का जीवन एक विशिष्ट सत्य की ओर संकेत करता है। कलाकार ने जीवन को कैसा पाया, उसके संबंध में क्या धारणा बनायी और जीवन को कैसा समझता है। संक्षेप में जीवन दर्शन कलाकार के जीवन की आलोचना है।"7

धर्म और संस्कृति संबंधी दृष्टिकोण

सांस्कृतिक जीवन दर्शन से तात्पर्य है जीवन का सांस्कृतिक जीवन दृष्टि से विवेचन-विश्लेषण करना। जब जीवन का विवेचन-विश्लेषण सांस्कृतिक जीवन दृष्टि को ध्यान में रखकर किया जाता है तब उसे सांस्कृतिक जीवन दर्शन कहते हैं। भीष्म साहनी के उपन्यास सामाजिक हैं। उन्होंने समाज के यथार्थ का चित्रण करने के साथ-साथ अपने उपन्यासों में धर्म और संस्कृति संबंधी अपने विचार अभिव्यक्त किए हैं। यहां भीष्म साहनी के धर्म एवं संस्कृति संबंधी दृष्टिकोण को अभिव्यक्त करना हमारा उद्देश्य है।

ईश्वर में आस्था

भीष्म साहनी ने 'कड़ियां' उपन्यास की नायिका प्रमिला के माध्यम से ईश्वर में आस्था व्यक्त की है। 'तमस' उपन्यास में भी ईश्वर में आस्था संबंधी प्रसंग आए हैं। इस उपन्यास में ईश्वर को सृष्टि का कर्ताधर्ता के रूप में स्वीकार किया गया है। "कुरान शरीफ में कहा है कि इनसान की खेतियां मेरे हुक्म से खड़ी हैं, इनसान के सब इरादे मेरे हुक्म पर खड़े हैं। मेरा हुक्म नहीं होगा तो लहलहाती खेतियां झुलस जाएंगी, मेरे हुक्म पर बाढ़ आयेगी, शहरों के शहर तबाह हो जाएंगे। और बूढ़े ने कहा सभी कुछ मालिक के हाथ में है। इनसान के हाथ में कुछ भी नहीं। सब काम पाक परवरदिगार के हुक्म से होते हैं। उसका जो हुआ होगा, वही होगा।"8 इसलिए मानव को अपना हाथ और दिल साफ रखना चाहिए। जिसका दिल साफ होता है, उसे किसी का डर नहीं रहता। तभी तो नत्थू की पत्नी कहती है, "जिसका दिल साफ होता है उसे भगवान कुछ नहीं कहते। हमारा दिल साफ है। हमें किसी का डर क्यों होने लगा।"9

'मय्यादास की माढ़ी' उपन्यास में भीष्म साहनी ने हरनारायण और वानप्रस्थी के माध्यम से ईश्वर में आस्था ओर विश्वास व्यक्त किया है। एक छोटा सा पुश्तैनी जमीन का टुकड़ा हरनारायण के पास था। जमीन-जायदाद में उसे

मोहमाया का पंक नजर आने लगा और वह भगवद् भजन में अपना समय बिताने लगा था। हरनारायण, बरगद के पेड़ के नीचे बैठा कुछ लिख रहा था। लेखराज ने पूछा कि "यह क्या लिख रहे हो, हरनारायण ? तब हरनारायण बोला, ''भगवान के नाम का जाप कर रहा हूं। इसी में सुख है। यह लिख् चुकने पर मैंने धारणा की है मैं गीता, सहस्रनाम उतारूंगा। वह भी मुझे कंठ है। और वह कागज पर लिखे शब्द गुनगुनाने लगा -

"ओम् नमो भगवते वासुदेवाय"10

'नीलू नीलिमा नीलोफर' उपन्यास में भी भीष्म साहनी ने ईश्वर को सृष्टि का कर्ता स्वीकार किया है। "काम बिगड़ते हैं तो काम संवर भी जाते हैं। यह कुदरत का कानून है, भगवान ने ऐसी ही सृष्टि बनाई है। कोई क्या करे।"11 इस प्रकार स्पष्ट है कि भीष्म साहनी ने ईश्वर में आस्था एवं विश्वास व्यक्त किया है तथा ईश्वर को सृष्टि के कर्ताधर्ता के रूप में स्वीकार किया है।

भाग्य में आस्था

भीष्म साहनी ने भाग्य में आस्था व्यक्त की है। भीष्म साहनी का विचार है सब कुछ भाग्य के हाथ में ही होता है, मनुष्य के हाथ में कुछ नहीं है। 'मय्यादास की माड़ी' में हरनारायण लेखराज से कहता है, "भाग्य के आगे कोई कुछ नहीं कर सकता। किस्मत फूट जाए तो कोई क्या करे ?"12 'नीलू नीलिमा नीलोफर में भी मां कहती है, हर बच्चा अपना भाग्य लेकर आता है। हमारी बेटी भी अपना भाग्य लेकर आई है। ईश्वर के आगे हाथ जोड़कर प्रार्थना करते रहा करो कि घर में सुख हो, शांति हो।"13 कुंतो उपन्यास में भी मां कहती है, "सब सुषमा की किस्मत पर छोड़ दो। लड़कियों का एकमात्र सहारा उसका भाग्य ही होता है।"14 सारांश यह है कि भीष्म साहनी के कतिपय पात्र आस्थावादी एवं भाग्यवादी व्यक्ति के रूप में हमारे समान के सामने उपस्थित होते हैं।

मानवीय मूल्य विषयक विचार

द्वितीय महायुद्ध में अपार धन-जन की हानि हुई थी। इसलिए द्वितीय महायुद्ध के बाद मानव-जीवन के प्राचीन संस्कार परिवर्तन के क्रम में स्थिर न रह सके और जीवन मूल्यों का विघटन होने लगा। इसके कारण लघुमानव का जन्म हुआ।

एक 'आत्मकथ्य' में भीष्म साहनी ने लिखा है कि, "एक लेखक के नाते मैं मानवतावादी मूल्यों से जुड़ता हूं। राजकुमार राजेश से बातचीत के क्रम में भीष्म साहनी ने मानवतावादी मूल्यों को परिभाषित करते हुए कहा है, "सच्चाई मानवतावादी मूल्य है। समाज के लिए यह अनिवार्य है। संवेदना, एक-दूसरे के प्रति सहानुभूति, सहनशीलता यह सभी मानवीय गुण हैं। इसलिए इन मानवतावादी मूल्यों को मैं समाज के लिए नितांत जरूरी मानता हूं। मेरे मन में मानवीय स्तर पर दूसरे व्यक्ति के लिए श्रद्धा हो, सद्भावना एवं सहनशीलता हो। सच के साथ मैं जुड़ता हूं। और मानव-समाज के लिए न्याय, सद्भाव और सहिष्णुता की अनिवार्यता को मानता हूं।"15

प्रगतिवादी लेखक प्राचीन परंपरागत मान्यताओं का तीव्र विरोध कर नवीन नैतिक मूल्यों एवं मान्यताओं की स्थापना करता है। भीष्म साहनी भी प्रगतिशील लेखक हैं। इसलिए इन्होंने भी अपने उपन्यासों में नवीन नैतिक मूल्यों की स्थापना की है। भीष्म साहनी का जीवन दर्शन के निर्माण में उनके शाश्वत विचार और उनकी जीवंत अंतर्दृष्टि है। भीष्म साहनी का मानना है

कि "एक-एक विचार, एक-एक जिंदा इनसान के बराबर होता है। फर्क इतना ही है कि इनसान खत्म हो जाता है, विचार खत्म नहीं होता, मरता नहीं। वह भले ही समय की धूल मिट्टी के नीचे दब जाए पर मरता नहीं, फिर से कुलबुलाकर उठ खड़ा होता है।"16 हर विचार का अपना स्वतंत्र अस्तित्व होता है। जन्म लेने के बाद, वह नवजात शिशु की भांति पनपने लगता है, बड़ा होने लगता है। वह विकास पाता है जैसे पौधा बड़ा होता है। फिर उस विचार में नये-नये अंकुर फूटते हैं, वह अपन भरपूर जीवन जीने लगता है।"17

आशा-निराशा, आस्था-अनास्था के मध्य झूलते हुए जीवन का व्यापक रूप में चित्रण करने के कारण उपन्यास को 'आधुनिक युग का महाकाव्य' कहा जाता है। सामाजिक मूल्य परिवर्तित होते जा रहे हैं। पहले समाज परंपरागत मूल्यों के आधार पर चलता था, अब परंपरागत मूल्य टूट रहे हैं और नवीन मूल्य मानव मन पर हावी होते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में समाज का जीवन अस्थिर और डांवाडोल हो रहा है और मानवीय मूल्यों का पतन इस सीमा तक हो जाता है कि पति-पत्नी का कहना नहीं मानता और पत्नी, पति की रुसवाई करवाने पर आमादा हो जाती है। 'कड़ियां' उपन्यास में ऐसा ही होता है।

धर्मांधता के नाम पर मानवीय मूल्यों का खात्मा करने का ज्वलंत उदाहरण 'नीलू नीलिमा नीलोफर' है। नीलोफर मां-बाप, भाई-बहन की बात न मानकर अपनी मर्जी से सुधीर से विवाह कर लेती है। वह सुधीर से कोई मैरिज करके शिमला में अपना नीड़ बसाती है। उसके बाद उसका भाई हमीद उसे बहला-फुसलाकर मां से मिलाने के लिए कस्बे में ले आता है। पर वह वहां उसे मां से न मिलाकर हमल गिराने के लिए गंदी बस्ती में खींच ले जाता है। तब भाई का वह पुरजोर विरोध नहीं कर पाती। उसका हमल जबरन उसका भाई गिरवा देता है। नीलोफर अपने खूंखार, अन्यायी, अधार्मिक, उन्मादी भाई के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं करती क्योंकि वह मानती है कि हमीद मेरा भाई है। ऐसा लगता है हमीद के दिल का दर्द मर गया है। यह है हमारे समाज की मानवीय मूल्य की स्थिति। यह है धर्मांधता के मद में मानवीय मूल्यों का खात्मा करना और मानवीयता को गहरे गड्ढे में धंसाना।

भाषा-शैली

एक सफल कथाकार यह सदैव ध्यान में रखता है कि भाषा इतनी सरल हो कि भाव पाठक को हृदयंगम हो सके। प्रेमचंद का कथा साहित्य भारतीय जीवन का कंठहार बन गया है, क्योंकि उन्होंने भारत के हृदय का चित्र भाषा के सरल धागे में पिरोया है। भीष्म साहनी को स्वतंत्रता के बाद का प्रेमचंद माना जाता है, क्योंकि उन्होंने प्रेमचंद के पथ का अनुसरण करने का प्रयास किया है। भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास साहित्य में सामान्यतः हिन्दी भाषा की खड़ीबोली के प्रचलित रूप को अपनाया है। रचना की स्वाभाविकता की रक्षा के लिए पात्रानुकूल भाषा के विविध रूपों और बोलियों का भी व्यवहार उन्होंने किया है। भीष्म साहनी ने अपने उपन्यासों में यह ध्यान रखा है कि भाषा उनके विचारों, भावों को अभिव्यक्त करने में सफल सिद्ध हो। उन्होंने तत्सम, तद्भव औश्र ग्रामीण शब्दों का प्रयोग बखूबी किया है। भाषा को सरल एवं मनोरंजक बनाने के लिए उन्होंने काव्यमयी भाषा के साथ-साथ गीतों की पंक्तियों का भी उपयोग किया है। भीष्म साहनी के लगभग सभी उपन्यासों में गीत की पंक्तियां मिलती हैं :

1 फूलों में हम आते हैं आते हैं

ठंडी मौसम में ठंडी मौसम में!
तुम किसको लेने आते हो, आते हो!
ठंडी मौसम में।"18

2 शिकवा किसी के हम, न कुछ फर्याद करेंगे
लेकिन सितम को तेरे सनम, याद करेंगे।"19

3 अंसा ते साइयां साडा करमा कमा दे
साडा गुलाम केलों, देस छुड़ा दे।"20

जिस भाषा की संप्रेषणशीलता जितनी ज्यादा होती है, वह भाषा उतनी ही अच्छी मानी जाती है। भीष्म साहनी की भाषा का यह गुण सर्वोपरि है। भीष्म साहनी के परिवेश की भाषा पंजाबी कम और उर्दू ज्यादा थी। यही कारण है कि मैय्यादास की माड़ी' उपन्यास में उर्दू के शब्दों का प्रयोग अधिकतर किया गया है। उदाहरण देखने योग्य है: अमलदारी बदल जाने का अर्थ होता है कल तक जो दुश्मन थे, वे दोस्त बन जाते हैं। कल तो जो भगौड़े थे, वे सिपहसालार बन जाते हैं। जो काला था, वह उजला लगने लगता है, और सैनिक ? सैनिक नहीं बदलता, वह केवल लड़ता है, मरता है, जान हथेली पर रखकर जंग के मैदान में उतरता है, अपने जौहर दिखाता है, क्योंकि वह अपने सालार के हुक्म पर मर मिटने की कसम खाए होता है।"21

भीष्म साहनी ने उर्दू मिश्रित हिन्दी एवं देशज शब्दों का सजीव प्रयोग किया है:

"चूरन बेचते हैं, तभी थोड़ा देश का काम भी कर पाते हैं सहदेव बाबू! हीरालाल ने हंस कर कहा था। अठन्नी रोज की मिल जाती है, आटा-दाल की जुगत हो जाती है।" उसने खिली-खिली आवाज में कहा था। पर ससुरा गला बैठ जाता है। किसी जलसे, जुलूस की मुनादी घंटों करते रहो, गला नहीं बैठता। सारा शहर घूम आओ, गला नहीं बैठता। पर यहां दो जगह चूरन की हेंक लगाओ तो ससुरी गले में खर्र-खर्र होने लगती है।...यह कहते हुए वह थोड़ी दूर तक सहदेव के साथ हो लिया था। साथ-साथ चलते हुए हंसकर बोला, "आजादी के बाद से काम लटके हुए हैं। पढ़ाई भी करूंगा। अब तीसरी जमात भी कोई पढ़ाई है ?..."22 सारांश यह है कि भीष्म साहनी के उपन्यासों की भाषा सरस, काव्यमय, अलंकृत और मुहावरेदार है। उन्होंने बनावटी भाषा का प्रयोग नहीं किया है।

निष्कर्ष

आदिम युग से मानव ने धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक और कलात्मक रूप में जो उपलब्धियां हासिल की हैं, उनके सम्मिश्रण को संस्कृति कहते हैं। भौतिक संस्कृति और आध्यात्मिक संस्कृति दोनों के संयुक्त विकास से ही मनुष्य पशु योनि से ऊपर उठकर वास्तव में मनुष्य कहलाने का अधिकारी बनता है। संस्कृति और जीवन दर्शन में घनिष्ठ संबंध होता है। सांस्कृतिक परिवर्तन के साथ जीवन दर्शन भी परिवर्तित होता रहता है। सांस्कृतिक पुनर्जागरण के फलस्वरूप नयी धार्मिक चेतना सामने आयी, जिसका प्रभाव भीष्म साहनी पर पड़ा। यही कारण है कि वे उनका दृष्टिकोण आस्थावादी रहा है। भीष्म साहनी के उपन्यासों के कुछ पात्र ईश्वर और भाग्य में आस्था व्यक्त करते हैं। साथ ही ईश्वर को सृष्टि का कर्ताधर्ता मानते हैं। पाप-पुण्य, सगुन-अपशकुन, जप-तप आदि में भी आस्था व्यक्त करते हैं। भीष्म साहनी ने अपने उपन्यासों में आज के परिवेश में विद्यमान मूल्यहीनता की स्थिति को उजागर किया है। उन्होंने मूल्यहीनता की स्थिति को उघाड़ने के लिए व्यंग्य का सहारा लिया है। उन्होंने नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के संघर्ष को ही नहीं वरन पुरानी पीढ़ी की पराजय और नयी पीढ़ी की मूल्यहीनता को भी उद्घाटित किया है। जीवंत

एवं मौलिक भाषा, नवीन सांस्कृतिक जीवन दृष्टि, नवीन प्रज्ञा एवं चुटीली शैली भीष्म साहनी के उपन्यास साहित्य की विशेषताएं हैं, जिनके कारण वे महानतम उपन्यासकारों की श्रेणी में खड़े दिखाई देते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 संस्कृति के चार अध्याय की प्रस्तावना से, लेखक श्री जवाहरलाल नेहरू, साहित्य अकादमी, नयी दिल्ली, 1956 पृष्ठ 11

2 संस्कृति है क्या शीर्षक लेख से, रामधारीसिंह दिनकर, साहित्य संचयन, प्रथम संस्करण, वेस्ट बंगाल टेक्स्टबुक कारपोरेशन, कलकत्ता, पृष्ठ 46

3 वही, पृष्ठ 47

4 वही पृष्ठ 48

5 हंस (अर्धशती विशेषांक), अक्टूबर 1997, पृष्ठ 66

6 वही, पृष्ठ 66

7 हिन्दी के आंचलिक उपन्यास और शिल्प विधि, डॉ.आदर्श सक्सेना, पृष्ठ 233-234

8 तमस, भीष्म साहनी, संस्करण 1995, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 98

9 वही, पृष्ठ 156

10 मय्यादास की माढ़ी, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 1995, पृष्ठ 84

11 नीलू नीलिमा नीलोफर, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

12 मय्यादास की माढ़ी, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,

13 नीलू नीलिमा नीलोफर, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ 135

14 कुन्तो, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993

15 पलप्रतिपल, संपादक देश निर्मोही, राजकुमार राजेश से भीष्म साहनी का वार्तालाप, मार्च-जून 2001, पृष्ठ 80

16 नीलू नीलिमा नीलोफर, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 38

17 वही, पृष्ठ 37

18 झरोखे, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 132

19 कुंतो, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ 246

20 मय्यादास की माढ़ी, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ 323

21 वही पृष्ठ 136-137

22 कुंतो, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ 266-267